Swar Sindhu ISSN 2348-9197(print), 2320-7175(online) Vol.2, Issue 4,October-Decmber, 2014

कांगड़ा जनपद के संस्कार तथा उनसे जुड़े गीतों का अध्ययन

सरिता कुमारी

पी–एच0 डी0 शोधार्थी, संगीत विभाग, हि0 प्र0 विश्वविद्यालय शिमला–5

साधारणतः संस्कार शब्द से अभिप्राय शुद्धता एवं परिष्कार से है। संस्कृत साहित्य में संस्कार का प्रयोग शिक्षा संस्कृति प्रशिक्षण, सौजन्य, स्वरूप, परिष्करण, शोभा एवं धार्मिक विधि–विधान आदि अर्थो में हुआ है। आजकल कांगड़ा जनपद में सोलह संस्कारों में से सभी का प्रचलन नहीं है। प्राचीन समय में सभी संस्कार विधिवत रूप से मनाए जाते थे। परन्तु आधुनिक युग में कई संस्कार जैसे–गर्भाधान, प्रसवन, समतोन्नयन, निष्क्रमण, वेदारम आदि प्रायः लुप्त हो गए हैं। शिक्षित समाज में जो संस्कार रह गए हैं, उनको मानने का प्रचलन दिखाई पड़ता है। परन्तु सामान्य जीवन में तो जन्म संस्कार, मुण्डन संस्कार, विवाह संस्कार तथा मृत्यु संस्कार देखने को मिलते हैं।

जन्म गीत

यह गीत स्त्री के गर्भवती होने से लेकर बच्चे के जन्म से दस ग्यारह दिन तक गाए जाते हैं और पुत्र जन्मदिन पर भी इनकी आवृति होती रहती है। इन गीतों को हिन्दी क्षेत्रों में ''सोहर'' तथा कांगड़ा की स्थानीय बोली में काले महिने, सूहडियां, हसणू–खेलणू भिहाइयां आदि की संज्ञा दी जाती है। इन गीतों में स्त्री की विभिन्न मानसिक स्थितियों, रूचियों, विरह भावना आदि प्रबल रहते हैं। वैदिक संस्कृति को प्रमुख रख कर इन गीतों में माता को कौशल्या, रूकमणी व सीता माता तथा पुत्र को राम, कृष्ण, श्याम, पुत्री को राधा आदि नाम से पुकारा जाता है। जन्मगीतों के अन्तर्गत, सोलर, हसणू–खेलणू, भ्याई आदि गीत आते हैं। जन्मगीतों से सम्बन्धित कुछ गीतों का विवरणात्मक अध्ययन इस प्रकार है–

बाला जन्मया किन्नी–किन्नी सुणया, कौण बंउे बधाई वे
अज साहड़े वाले जन्म लया, बाला जन्मया दादिया सुणया
दादा बंडे बधाई वे, अज साहड़े वाले जन्म लया।
बाला जन्मया किन्नी–किन्नी सुणया, कौण बंडे बधाई वे
अज साहड़े वाले जन्म लया, बाला जन्मया ताईया सुणया
ताया बंडे बधाई वे, आज साहड़े वाले जन्म लया।
(गाली) पैसेया लैंदे बामण परोत, नानिया लै गया नाई वे
अज साहड़े वाले जन्म लया।

भावार्थ–प्रस्तुत गीत में पुत्र जन्म पर प्रसन्नता प्रकट की जा रही है। पुत्र ने जन्म लिया है और कौन–2 पुत्र के जन्म पर पुत्र की दादी, ताई, चाची झूम रहीं हैं और पुत्र के दादा, ताया, चाचा बधाई बांट रहे है। इसके साथ ही पुत्र की नानी पर व्यंग्य भी किया जाता है कि पुत्र जन्म की खुशी में नाई पुत्र की नानी को ही (बधाई रूप में) उठा कर ले गया। यह गीत आगे इसी प्रकार सम्बन्ध जोड़ता हुआ आगे बढ़ता है।

स्वरलिपि

सा रे रे सा बा ऽ ला ऽ	रे ग ग – ज न म या	रे – रे ग कि नी कि नी	रे सा सा नी़ सु ण या ऽ
सा – रे रे कौ ऽ ण बं	ध़ – सा – डे ऽ ब ऽ	सा – रे – धा ऽ ई ऽ	ग – – – वे ऽ ऽ ऽ
सा रे रे रे अ ज सा डे ×	म ग ग – बा ऽ ले ऽ 0	रे – रे सा ज न म ले ×	सा – – – या ऽ ऽ ऽ 0

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गायी जाएगीं। इस गीत की चाल कहरवा के समान है तथा यह गीत 8 मात्रा के ताल में निबद्ध है। इस गीत के साथ ढोलक वाद्य की संगति भी की जाती है तथा कभी–कभी हाथों द्वारा ताली बजा कर ताल दे दिया जाता है।

नामकरण सम्बन्धी गीत

हरि–हरि द्रुब हरे वन से मंगायो रे
दादा जी दी पगड़ी सजायो मेरे राम–2
पगड़ी बनि के दादा हट्टी बल जामदे
सगन मनावे सारी लोकी मेरे राम–2
हरी –हरी द्रुब हरे वन से मंगायो रे
बाबा जी दी पगड़ी सजायो मेरे राम–2

इस प्रकार दादा, बाबा के स्थान पर अन्य सम्बन्धियों का नाम जोड़ कर गीत का विस्तार किया जाता है। भावार्थ–प्रस्तुत गीत में कहा गया है कि हरी–2 द्रुव वन से मंगवाओ और नामकरण के समय उस द्रुव को बालक के दादा की पगड़ी पर लगाओं। जब दादा पगड़ी बांध कर बाजार जाएगें तो उन्हें देखकर सभी लोग प्रसन्न होगे और पोते के गूंतर संस्कार या नामकरण संस्कार की बधाई देगें।

स्वरलिपि

हरि–हरि द्रुब हरे वन से मंगायो रे..........

ग – ग – ह ऽ री ऽ	रे – रे – ह ऽ री ऽ	सा – ध़ – द्रु ऽ ब ऽ	ध़ सा सा रे ह ऽ रे ऽ
रे – ग ग व ऽ न ऽ	रे – सा – से ऽ मं ऽ	सा रे रे ग गा ऽ यो ऽ	ग – सा रे रे ऽ ऽ ऽ
ग – ग – दा ऽ दा ऽ	रे – रे – जी ऽ दी ऽ	सा – सा – प ऽ ग ऽ	रे ग सा रे ड़ी ऽ स ऽ
ग – ग – जा ऽ यो ऽ	रे – रे – मे ऽ रे ऽ	सा – – – रा ऽ ऽ ऽ	– – – – ऽ ऽ म ऽ

प्रस्तुत गीत कांगड़ा की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों में गाई जाएगी। यह गीत 8 मात्रा के ताल में निबद्ध है। इस गीत की चाल कहरवा ताल के समान प्रतीत होती है। इस गीत की चाल कहरवा ताल के समान प्रतीत होती है। इस गीत में राग 'भूपाली' की छाया मिलती है भूपाली राग का आभास इन स्वरों द्वारा होता है– सा ध़ धसा सारे रे गग रेसा ।

मुंडन गीत

मुंडन गीत कांगड़ा जनपद में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। कांगड़ा के मुण्डन संस्कार गीतों में देवयात्रा का महत्व मिलता है। इस गीत को भिन्न शब्दावली में गाया जाता है। बालों को देवस्थान या किसी वट वृक्ष के नीचे काटना शुभ समझा जाता है। इस प्रकार के मुण्डन संस्कार में चाचा, ताऊ व नाना आदि का नाम आता रहता है।

नाईया जी साड़े धर्म देया भाईया
गीगे देयां केसां उतारे ऐं
सोने दियाा कैचिया, चादी दे उस्तरें
गीगे देयां केसां उतारें ऐं
वीरा जी मेरिया अम्मा दा जाया
गीगे देयां केसा लेयां ऐं।।

भावार्थ– माता कहती है कि हे। नापित। तुम मेरे धर्म भाई हो। मेरे बालक के बालों को सोने की कैंची तथा चांदी के उस्तरे के साथ उतारो। फिर माता अपने भाई से कहती है कि भईया। तुम मेरे बालक के बालों को थाम लो (इकट्ठा कर के रख लो)।

स्वरलिपि

नाईया जी साड़े धरमें देया ....

सा	–रे	सा	ग	–	रे	सा
ना	ऽई	या	जी	ऽ	सा	ड़े
सा	रे	रेसा	ग	–	रे	रेसा
गी	गे	देयां	के	ऽ	सां	उऽ
सा	गरे	ग	–	–	–	–
ता	रैऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऐं

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गायी जाएगीं। यह गीत रूपक ताल के समान सात मात्राओं में निबद्ध है। परन्तु अनिबद्ध रूप से गाया जाता है । इस गीत में राग 'राग भूपाली' की छाया मिलती है। भूपाली का आभास इन स्वरों द्वारा होता है– सासा रे सासा सा ध़ सा रे रेसा ग

यज्ञोपवीत संस्कार

यह संस्कार षोड़स संस्कारों में से एक प्रसिद्ध संस्कार है। कांगड़ा क्षेत्र में इसका महत्व अब कम होता जा रहा है। साधारण बोलचाल में इसका महत्व अब कम होता जा रहा है। साधारण बोलचाल में इसे 'जनेऊ कहते हैं। यज्ञोपवीत धारण करने का उदेश्य आयु, बल और तेज की वृद्धि द्वारा मानव धर्म का पालन करना है। बालक की उचित आयु हो जाने पर उसे गुरू के समक्ष ज्ञानार्जन के लिए भेज दिया जाता है। यदि इस आयु में यह संस्कार न हुआ हो तो विवाह पर सम्पन्न किया जाता है। बालक को जोगी बनाया जाता है तथा वह अपने सभी सगे सम्बन्धियों से भिक्षा मांगने की प्रार्थना करता है–

गीत

पाया माए भिछया मैं नौआं मंगण सिखया ए
लौंगा भिछया सपारिया भिछया नौआं मंगण सिखया ए
लौंगा भिछया सपारिया भिछया पायां माए भिछया ए
देयां ताई भिछया मैं नौआं मंगण सिखया ए
लौंगा भिछयां सपसरिया भिछया नौआ मंगण सिखया ए ।।

इस गीत में माए(माता) के स्थान पर अन्य सम्बन्ध जोड़ कर गीत को बढ़ाया जाता है।

भावार्थ : यज्ञोपवीत के समय बालक अपने गुरू के कहने पर अपने परिवार के सदस्यों से भिक्षा पाकर आज ब्राह्मण बना हूं। लौंग, सुपारी की भिक्षा इस नन्हें ब्राह्मण को दान करो। इस समय गाए जाने वाले गीतों में जहां वात्सल्य वर्णन अपनी चरम सीमा पर दिखता है वहां बालक का योगी स्वभाव

भी कम व्यक्त नहीं होता। यह प्रथा उस प्राचीन परम्परा की ओर संकेत करती है, जब आश्रम या गुरू कुल में रहने वाला प्रत्येक ब्रह्मचारी अपनी तथा अपने परिवार की उदर पूर्ति के लिए भिक्षा मांग कर लाया करता था।

स्वरलिपि

पायां माए भिछया, मैं नौंवा मंगण सिखिया ए।

ध़ सा –	सा – सा रे	रे ग –	ग रे ग सा
पा यां ऽ	मा ऽ ए ऽ	भि छ ऽ	या ऽ मैं ऽ
सा ग रे	ग – ग –	रे ग सा	साग रेग –सा सा
नौ वां ऽ	मं ऽ ग ण	सि खि ऽ	याऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
– – –	– – –		
ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ		

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएगीं। इस गीत में केवल स्थाई है। स्थाई की अंतिम पंक्ति अनिबद्ध रूप में है परन्तु गीत के छन्द दीपचन्दी ताल में सदृश लगते हैं। इस गीत में राग भूपाली की छाया मिलती है।

कांगड़ा जनपद के विवाह संस्कार के गीत

सुहाग गीत

चरखे दियां पुणियां माये चरखे ने रहियां
दहिये दी भरी है छलैण माए चलिया जाणा.......

ताल दीपचन्दी

सा रे सा	ध़ – नि –	सा सा –	सा रे रे म
च र ऽ	खे ऽ दि यां	पु णि यां	मा ऽ ये ऽ
म – ग	रे – म ग	रे – सा	सा – – –
च र ऽ	खे ऽ ने ऽ	र हि ऽ	यां ऽ ऽ ऽ
म – –	म – म –	प ध प	प म म –
द हिं ऽ	ऐ ऽ दी ऽ	भ री ऽ	ऐ ऽ छ ऽ
ग – –	रे – सा –	सा रे म	म – म ग
लै ऽ ऽ	ण ऽ मा ऽ	ऐ ऽ ऽ	च लि या ऽ
रे – –	सा – – –	रे – –	– – – –
जा ऽ ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
+	2	0	3

Pratibha Spandan

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरों पर गाई जाऐगी। यह गीत 14 मात्राओं के 'दीपचन्दी ताल' में निबद्व है। इस गीत के साथ कभी–कभी ढोलक वाद्य भी प्रस्तुत होता है।

प्रस्तुत गीत में 'गोरख कल्याण' राग की छाया मिलती है। राग गोरख कल्याण का आभास इन स्वरों के द्वारा होता है: रे म रे म रे सा नि़ नि़ ध़ सा।

वर पक्ष का सगाई गीत

छप गईयां छप गईयां अखबारां
वीरा वे तेरे सगन दिया।
कौन पढ़े अखबारा
मामी वीरे दी सगन मनावे
मामा पढ़े अखबारां
वीरा वे तेरे सगन दियां।
छप गईयां, छप गईयां अखबारा
वीरा वे तेरे सगन दियां।''

इस प्रकार मां, बहन, जीजा, चाचा, चाची आदि अन्य रिश्तेदारों के नाम लेकर गीत को आगे बढ़ाया जाता हैं।

नि़रे रेग म – छप गई या ऽ	मम मध म– मग छप गई याऽ अख	रे– रेरे रेग मग बाऽ रावी रावे तेरे	रेग ग गग – सग न दियां ऽ
नि़रे रे रेरे ग माऽ मी वीरे दा	गम म गग रे सग न मना वे	गम मध म मग माऽ माप ढ़े अख	रे– रेरे रेग मग वाऽ रौवी रावे तेरे
रे ग गग ग सग न दियां ऽ			

शेष चरण इसी प्रकार से गाए जाते हैं।

बधावा गीत

औंदा बधावा, गौरें जे आया
गोरे मैं रखनी, सोलाई......

दीपचन्दी ताल

नि़ – सा औं ऽ ऽ	रे – – ग दा ऽ ऽ ब	रे – सा धा ऽ ऽ	सा – – – बा ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा गौ ऽ ऽ	रें – – ग रैं ऽ ऽ जे	म – ग आ ऽ ऽ	रे – – – या ऽ ऽ ऽ
रे ग – गौ ऽ ऽ	रे – स – रे ऽ मैं ऽ	नि़ – स र ख ऽ	रे – – ग नी ऽ ऽ सो
रे – सा ता ऽ ऽ +	सा – – – ऽ ऽ ऽ ऽ 2	– – – ऽ ऽ ऽ 0	– – – – ऽ ऽ ऽ ऽ 3

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरों पर गायी जाऐंगी। यह गीत 14 मात्राओं के 'दीपचन्दी ताल' में निबद्ध होने पर भी अनिबद्ध रूप से गाया जाता है।

उबटन गीत

बाए वा कि बुटणा काहे दा......

कहरवा ताल

	प़ नि़ नि़ – बा ऽ ऐ ऽ
सा – – – बा ऽ ऽ ऽ	– – सा रे ऽ ऽ कि ऽ
नि़ – सा – बु ट ऽ ऽ	– – सा रे णा ऽ ऽ ऽ
ग – रे – का ऽ हे ऽ	सा – – – ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – प़ – दां ऽ ऽ ऽ +	 0

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाऐगी। यह गीत 8 मात्रा के 'कहरवा ताल' में निबद्ध है। इस गीत के साथ ढ़ोलक वाद्य की संगति भी की जाती है। प्रस्तुत गीत में राग 'तिलक कामोद' की छाया मिलती है। 'तिलक कामोद' कामोद का आभास इन स्वरों से होता हैं– प़ नि़ नि़ सा, रे नि़ सा रे ग।

तरीड़ा गीत

सेतिए सरूऐं, पीवल रंगे
किन्नी बाई, किन्नी राई
किन्नी कित्ता, तरीड़ा ए.......

दीपचन्दी ताल

नि़ – –	सा – – सा	रे नि़ –	नि़ प़ – –
सें ऽ ऽ	ति ऽ ए ऽ	स रू ऽ	ऐ ऽ ऽ ऽ
नि़ – –	सा – – सा	ग – सा	सा – – –
पी ऽ ऽ	व ऽ ऽ ल	र ऽ ऽ	गे ऽ ऽ ऽ
नि़ – –	सा – – सा	रे नि़ –	नि़ प़ – –
कि ऽ ऽ	नी ऽ ऽ ऽ	बा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
नि़ – –	सा – – सा	(र)ग – सा	सा – – –
कि ऽ ऽ	नी ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
नि़ – –	सा – – सा	रे नि़ –	नि़ प़ – नि़
कि ऽ ऽ	नी ऽ ऽ ऽ	कि ऽ ऽ	ता ऽ ऽ त
नि़ – –	(स)रे – – सा	सा – –	– – – –
री ऽ ऽ	ड़ा ऽ ऽ ऽ	ऐ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
+	2	0	3

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गायी जाऐगी।

यह गीत 14 मात्रा के 'दीपचन्दी ताल' में निबद्ध होने पर भी अनिबद्ध रूप से गाया जाता है। इस गीत में राग 'गावती' की छाया मिलती है। राग गावती का आभास इन स्वरों द्वारा होता है: नि़ सा रे नि़ प़ नि़ सा ग।

Pratibha Spandan

तेल गीत

ठवक कटोरड़िए
कुनी पाया तेल वे
ठणक कटोरड़िए
कुनी पाया तेल वे....

कहरवा ताल

सा	–	सा	–	सा	–	सा	–
ठ	ऽ	ण	ऽ	क	ऽ	क	ऽ
रे	–	सा	सा	नि़	–	–	–
टो	ऽ	रे	ड़ि	ऐ	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	<u>नि़</u>	प़	–	ध़	सा	सा	–
कु	ऽ	नी	ऽ	पा	ऽ	या	ऽ
सा	–	–	रे	म	–	–	ग
ते	ऽ	ऽ	ल	वे	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	सा	–	सा	–	सा	–
ठ	ऽ	ण	ऽ	क	ऽ	क	ऽ
रे	–	सा	सा	नि़	–	–	–
टो	ऽ	र	ड़ि	ए	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	<u>नि़</u>	प़	–	ध़	सा	सा	रे
कु	ऽ	नी	ऽ	पा	ऽ	या	ऽ
(म)रे	–	–	सा	सा	–	–	–
ते	ऽ	ऽ	ल	वे	ऽ	ऽ	ऽ
+				0			

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं पर गाई जाऐगी।

यह गीत 8 मात्रा के 'कहरवा ताल' में निबद्ध है। इस गीत के साथ ढोलक वाद्य की संगत की जाती है। प्रस्तुत गीत में राग 'बागेश्वरी' की छाया दिखाई देती है। बागेश्वरी राग का आभास इन स्वरों द्वारा होता है:– सा नि़ ध़ ध़ सा सा सा।

लग्न गीत

बाहर आ मेरी बाल कन्या

काहन लग्न जो आया ऐ.....

प़ नि़ नि़ बा ह र	नि़सा सारे आऽ ऽऽ	रे सानि़ मे रीऽ
नि़सा सारे रेसा बाऽ ऽऽ लऽ	सा सा क	रेसा रेनि़ याऽ ऽऽ
नि़ – नि़ का ह न	नि़सा सारे लऽ गऽ	रे नि़ ना जो
नि़सा सारे रेसा आऽ ऽऽ याऽ +	सा – ऐ ऽ 2	– प़ ऽ ऽ 3

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई। यह गीत 7 मात्रा का 'रूपक ताल' में निबद्व होने पर भी अनिबद्ध गाया जाता है। इस गीत में राग 'वृन्दावनी सारंग' की छाया आती है।

विदाई गीत

कानु आए सुनैरी, पग बन के

सुनैरी पग बन के

बाबे ने बेटी नई तोरनी.......

दीपचन्दी ताल

			ध़ प़ प़ – का ऽ नु ऽ
^{स}ध़ – – आ ऽ ऽ	सा – सा – ऐ ऽ सु ऽ	सा रे – नै री ऽ	ग – ग रे प ऽ ग ऽ
रे ग रे ब न ऽ	रे सा सा – के ऽ बा ऽ	सा रे – नै री ऽ	ग – ग रे प ऽ ग ऽ
रे ग रे ब न ऽ	रे सा सा नि़ के ऽ बा ऽ	सा रे – वे ने ऽ	ग – ग सा बे ऽ टी ऽ
सा सा – न ई ऽ +	^{ग}रे – – सा तो ऽ ऽ र 2	सा – – नी ऽ ऽ 0	

प्रस्तुत गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों में गाई जायेंगी।

यह गीत 14 मात्रा के 'दीपचन्दी ताल' में निबद्ध है, परन्तु अनिबद्ध पाया जाता है। प्रस्तुत गीत में राग 'शुद्व कल्याण' की छाया आती है। शुद्व कल्याण राग का आभास इन स्वरों द्वारा होता हैः–

ध़ प़ ध़ सा सा सा रे, ग ग रे, सारे ग, ग रे, रे ग रे, रे सा सा नि़ सा रे ग, ग सा।

मृत्यु गीत

मृत्यु संस्कार जीवन का अन्तिम संस्कार है। यह शोक का दृश्य उत्पन्न करता है। सभी प्रांतो में इस संस्कार सम्बन्धी लोकगीत प्रचलित हैं। कांगड़ी मृत्यु गीतों में व्यंजित लोक भावनाओं का एक रूप हैं। हमारा पूरा जीवन संगीतमय है। जीवन के प्रत्येक अवसर पर लोकगीत सहज ही गूंज उठते हैं। यह संगीत मौत के करूण रूदन को भी लय में बांध देता है। मृत्यु गीतों की एक लम्बी पौराणिक परम्परा रही है। इसका उल्लेख पौराणिक परम्परा रही है। इसका उल्लेख पौराणिक ग्रन्थों में भी मिलता है।

डॉ. विद्या चौहान के अनुसार –''रामायण एवं महाभारत में मृतात्माओं के प्रति शोकाभिव्यक्ति प्राप्त होती है। कालीदास ने कुमार सम्भव में कामदेव के भस्म हो जाने पर रति का क्रन्दन प्रस्तुत किया है।'' मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों का भी लोक में प्रचलन है बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी उमर के वर्ग के मृत्युगीत भी कांगड़ा लोक में उसी उमर के वर्ग के मृत्युगीत भी कांगड़ा लोक में उसी मार्मिक हृदय से प्रस्तुत करते है जिसे अल्हैणी कहा जाता है–

गीत

मौत नमाणी आई ए बेड़ा साऐ दा ओ, हाय मेरे बाबुला हायो
दूरौ आईयां जाईयां, बेडा साऐ दा ओ, हाय मेरे बाबुला हा यो
रथड़ा पलंग पलटया, बेड़ा साऐ दा ओ, हाय मेरे बाबुला हा यो
किनी दित्तियां लाठिया के बेड़ा साऐ दा ओ, हाए मेरे बाबुला हा यो
पैंचा दित्तियां लठियां, बेड़ा साऐ दा ओ, हाए मेरे बाबुला हा यो
तेरे जायें दित्ती अग्ग वे कि बेड़ा साऐ दा ओ, हाय मेरे बाबुला......

भावार्थ– प्रस्तुत गीत में बाबुल अथवा पिता की मृत्यु हो जाने पर उसकी पुत्री रूदन करती हुई कहती है कि हाय मेरे बाबुल, नमाणी (निर्मोही) मौत आ गई आपकी सांसे चली गई। आपकी मौत सुनकर आपके सम्बन्धी दूर–दूर से हैं आपका रथ के समान बड़ा पलंग उठा दिया है। आपके मृत

शरीर को आग किसने दी है। आपके पुत्र ने आपको आग दी है। हाय मेरे बाबुल आपकी सांसे चली गई।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कांगड़ा जनपद के संस्कार तथा उनसे जुड़े गीतों का लोक जीवन में विशेष महत्व है। यहां के गीतों में भाव, अनुभव तथा मनोभाव प्रतिलक्षित होते हैं। यहां के संस्कार गीतों में जीवन की सरलता, रीति–रिवाज, परम्पराएं, रहन–सहन, खान–पान, पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्ध तथा समकालीन संस्कारों की यथार्थ रूप में अभिव्यक्ति पाई जाती है। कांगड़ा जनपद के गीत सभी प्रकार के रसों से ओत–प्राते हैं। अतः यहां के संस्कार गीत हमारी संस्कृति तथा समाज को दृढ़ करने में आज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूंची

1. साक्षात्कार– श्रीमती लाजवन्ती देवी, श्रीमती व्यास देवी, श्रीमती सैना देवी, श्रीमती वीना देवी
2. साक्षात्कार– श्रीमती किरण लता, श्रीमती लाजवन्ती, श्रीमती सन्तोश देवी
3. साक्षात्कार– श्रीमती किरण लता, श्रीमती लाजवन्ती, श्रीमती सन्तोश देवी, श्रीमती श्रेष्ठा देवी
4. साक्षात्कार– श्रीमती व्यासादेवी, श्रीमती भुखादेवी, श्रीमती प्रेमलता, श्रीमती रक्षादेवी, श्रीमती प्यारी देवी
5. डॉ. मनोरमा शर्मा, लोकमानस के सुरीले स्वर, पृ0–54
6. विधा चौहान– लोक साहित्य, 1986, पृ0 166